DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS) PAPER-1 ,UNIT-7,PHYSIOLOGICAL CORRELATES IN EMOTION

LECTURE-20

संवेग (EMOTION)

PHYSIOLOGICAL CORRELATES(BODILY CHANGES) IN EMOTION

संवेग का दैहिक सहसम्बद्धता

संवेग पद का अंग्रेजी रूपान्तर 'EMOTION' है जो लैटिन शब्द EMOVERE में बना है जिसका अर्थ उत्तेजित करना होता है |इस शाब्दिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है की संवेग व्यक्ति की उत्तेजित अवस्था का दूसरा नाम है |इसी अर्थ को ध्यान में रखते हुए गेल्डार्ड 1963 ने कहा है "संवेग क्रियाओं का उत्तेजन है" | लेकिन संवेग में सिर्फ उत्तेजित अवस्था ही नहीं होती है बल्कि कुछ और प्रतिक्रियाएँ भी होती है |

इंग्लिश तथा इंग्लिश (1958) के अनुसार "संवेग से तात्पर्य एक ऐसे आत्मनिष्ठ भाव की अवस्था से होता है जिसमे कुछ शारीरिक उत्तेजन पैदा होता है फिर जिसमे कुछ खास ख़ास व्यवहार होते है" संवेग की अवस्था में व्यक्ति में महत्वपूर्ण शारीरिक सहसम्बद्धता या परिवर्तन होते है |इस तरह

के शारीरिक परिवर्तन को हम मूलतः दो भागो में बाँट कर अध्ययन कर सकते है -

1. बाह्य शारीरिक परिवर्तन (EXTERNAL BODILY CHANGES)
2. आंतरिक शारीरिक परिवर्तन (INTERANAL BODILY CHANGES)

बाह्य शारीरिक परिवर्तन का वर्णन निम्नांकित है –

(i)बाह्य शारीरिक परिवर्तन- संवेग में होने वाले बाह्य शारीरिक परिवर्तन से तात्पर्य वैसे परिवर्तनों से है जो स्पष्ट रूप से व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है तथा जिसे हम अपनी आँखों से देख सकते है| जैसे –क्रोध की अवस्था में व्यक्ति का चेहरा लाल हो जाता है ,होठ काँपने लगता है ,आँखे बड़ा-बड़ा कर वह बोलता है ,आदि –आदि |चूँकि ये सभी शारीरिक परिवर्तन ऐसे होते है जिन्हें कोई भी व्यक्ति आसानी से देख सकता है ,अतः इन सभी तरह के शारीरिक परिवर्तन को बाह्य शारीरिक परिवर्तन कहा जाता है |

मनोवैज्ञानिकों में इस तरह के बाह्य शारीरिक परिवर्तनों को तीन भाग में बाँट कर अध्ययन किया है –

(i)आनन अभिव्यक्ति में परिवर्तन (CHANGES IN FACIAL EXPRESSION)

(ii) शारीरिक मुद्रा में परिवर्तन (CHANGE IN BODILY POSTURES)

(iii) स्वर अभिव्यक्ति में परिवर्तन (CHANGE IN VOCAL EXPRESSION)

इन परिवर्तनों की व्याख्या निम्नांकित है :-

(a) आनन अभिव्यक्ति में परिवर्तन –संवेग में व्यक्ति के चेहरे या मुखाकृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते है जिसके आधार पर उक्त संवेग का ज्ञान होता है |मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चेहरे में बहुत संवेदनशील एवं छोटी छोटी पेशियाँ होती है जो संवेग के उत्पन्न होने पर फैलना सिकुड़ना

प्रारंभ कर देती है |अतः चेहरे में संवेग की स्थिति में बहुत जल्द परिवर्तन आता है |इजार्ड (1977-1990)के अनुसार आनन अभिव्यक्ति द्वारा छः प्रमुख संवेगों की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है –खुशी,उदासी ,आश्चर्य ,डर,क्रोध ,एवं घृणा |इस सिलसिले में कुछ प्रयोगात्मक अध्ययन अग्रांकित है –

सबसे महत्वपूर्ण अध्ययन इस दिशा में लैंडिस (1924) द्वारा किया गया | उन्होंने अपने प्रयोज्यों को भिन्न भिन्न प्रकार के संवेग उत्पन्न करने वाले कार्य करने के लिए कहा | जब वे इन कार्यों को कर रहे थे ,तो उनके आनन अभिव्यक्ति का तस्वीर लिया गया |उन्होंने अपने अध्ययन में पाया की भिन्न भिन्न प्रयोज्य एक ही तरह के संवेग उत्पन्न करने वाले कार्य के करने पर अलग अलग आनन अभिव्यक्ति करते है |उसी तरह से कोलमेन (1949)ने गतिशील तस्वीरों के आनन अभिव्यक्ति के आधार पर भी इसी तरह का परिणाम पाया |कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलया है की कुछ प्रमुख संवेग –क्रोध ,भय ,आदि की जो आनन अभिव्यक्ति होती है वह एक जन्मजात प्रक्रिया है क्योंकि सभी संस्कृति के लोग ऐसे करने में सफल होते है| बेरोन(1992) ने आनन अभिव्यक्ति को संवेग का एक सार्विक भाषा(UNIVERSAL LANGUAGE) माना है |

इजार्ड (1971)ने एक अध्ययन किया जिसमे 8 चेहरे के चित्रों (जिसके द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार के संवेग दिखलाए जा रहे थे)को भिन्न भिन्न संस्कृति से लिए गये प्रयोज्यों को दिया |लोगो को यह बतलाना था की इन चेहरों से किस –किस प्रकार का संवेग व्यक्त हो रहा है |परिणाम में यह देखा गया की अधिकतर व्यक्तियों ने इन चेहरों के चित्रों के आधार पर सही-सही संवेगों का निर्णय दिया |19वीं शताब्दी में

चार्ल्स डार्विन द्वारा कही गयी बात की आनन अभिव्यक्ति संवेग की एक जन्म जात अभिव्यक्ति है ,को लोगो ने सही ठहराया |

(b) शारीरिक मुद्रा में परिवर्तन –प्रत्येक संवेग में शरीर की एक ख़ास मुद्रा होती है |अतः संवेग से व्यक्ति के शारीरिक मुद्रा में भी परिवर्तन होता है |प्रायः दुःख के संवेग में व्यक्ति का शरीर कुछ झुका हुआ तथा क्रोध में उसका शरीर कुछ अकड़ा हुआ एवं तना हुआ दिखाई परता है |मनोवैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग के आधार पर यह बतलाया है की प्रत्येक संवेग में व्यक्ति का हाथ,पैर,सिर आदि की विशेष मुद्रा होती है |यह मुद्रा ऐसी होती है की इसके आधार पर हम यह कह सकते है की व्यक्ति में विभिन्न संवेगों में से कौन सा संवेग हो रहा है| शायद यही कारण है की मूक भूमिका जिसमे नायक या नायिका मात्र अंगो का संचालन करते है ,को देखकर हम समझ जाते है की उसमे अमुक संवेग हो रहा है | प्रत्येक संवेग में हमारी शरीरिक मुद्राओं में कुछ-ना-कुछ परिवर्तन आते है |यद्दपि शारीरिक प्रदर्शन में एक संस्कृति से दुसरे संस्कृति में कुछ विभिन्नता पायी जाती है फिर भी सभी संस्कृति या समाज के लोगो में कुछ ख़ास ख़ास संवेगात्मक क्रियाओं जैसे –दूसरों को शुभकामना देने अलविदा करने ,अपमान करने आदि के कुछ सामान्य शारीरिक तरीके होते है जिसके माध्यम से व्यक्ति के संवेगों के बारे में अंदाज किया जाता है |कुछ मनोवैज्ञानिक जैसे –बेरोन,बर्न तथा कैनटोविज (1980) के अनुसार सिर्फ शारीरिक मुद्रा के आधार पर संवेग पहचानने में कठिनाई इसलिए होती है क्योंकि प्रत्येक संवेग की शारीरिक मुद्रा एक दूसरे से पुर्णतः भिन्न नहीं होती है अर्थात शारीरिक मुद्रा के कुछ अंश एक से अधिक संवेग में सामान्य रूप से पाए जाते है |फलतः शारीरिक मुद्रा को ही मात्र देखकर अभिव्यक्ति संवेग को हमेशा ठीक ढंग से समझा नहीं जा सकता है |

(c) स्वर अभिव्यक्ति में परिवर्तन – संवेग की स्थिति में व्यक्ति की आवाज में भी परिवर्तन आ जाता है जिसे सुनकर हम आसानी से व्यक्त संवेग का अंदाज लगा लेते है | जैसे यदि कोई व्यक्ति थोड़ी दूर पर जोर –जोर से बोलता हुआ सुना जाता है तो प्रायः हम अंदाज लगा लेते है की व्यक्ति क्रोधित है |व्यक्ति के आवाज की तीव्रता ,बोलने का ढंग ,स्वर विराम तथा स्वर आरम्भ आदि के आधार पर हम अभिव्यक्त संवेग का अंदाज लगाते है |इस सिलसले में भी कुछ प्रयोगात्मक सबुते है जिनके आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है की स्वर अभिव्यक्ति द्वारा भी संवेग का अंदाज हमे मिलता है |विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने स्वर अभिव्यक्ति पर प्रयोग किया और पाया की स्वर अभिव्यक्ति के आधार पर संवेग की पहचान संभव है |हालाँकि जब स्वर अभिव्यक्ति जटिल होती है ,तो वैसी परिस्थिति में पहचान थोड़ी कठिन हो जाती है |